ISSN 2278-6910
पंजीयन क्र. आर.एन.आई.-12738

द्वैमासिक पत्रिका

साहित्यांचल

सितम्बर– अक्टूबर 2019

79

दशम् राष्ट्रीय साहित्यांचल शिखर सम्मान समारोह–2019

Scanned with CamScanner

पंजीयक समाचार पत्र भारत– राज–हिन्दी / 2004–12738

ISSN-2278-6910

द्वैमासिक पत्रिका

साहित्यांचल

तमसो मा ज्योतिर्गमय

वर्ष– 16 पूर्णांक – 79 सितम्बर–अक्टूबर 2019 अंक– 3

श्री रामपाल सोनी
(संरक्षक)

डॉ. ए. बी. सिंह
डॉ. मंजु पाण्डेय
डॉ. विनय कुमार पाठक
(परामर्शक)

– संस्थापक सदस्य –

श्रीमति ममता–श्रीनिवास मोदानी
डॉ0 सुरेश / शैलजा माहेश्वरी
श्री प्रसन्न कुमार खमेसरा
श्री शांतिलाल दाधीच 'शून्य'
श्री महेन्द्रप्रकाश व्यास
श्री एस.एन.जोशी
श्री एम.एल.मरमट
श्री एस.एस.गम्भीर
श्री कैलाश मीणा

सम्पादक मण्डल (मा.)

सत्यनारायण व्यास 'मधुप'
रविकान्त व्यास
निर्मलकान्त व्यास
डॉ. राजमती सुराणा
गुलाबचंद मीरचंदानी
सुदीपा व्यास
मंजूर खान पठान

प्रबन्ध सम्पादक
राजेश शर्मा

सूचना

1. आगामी अंक नवम्बर–दिसम्बर 2019 में प्रकाशित होगा। हमें आपकी रचनाएं 25 अक्टूबर 2019 तक प्राप्त हो जानी चाहिये।
2. रचनाकार अपनी रचनाएं पूर्णतः अप्रकाशित, स्पष्ट हस्तलिखित, टंकित, करवाकर ही भिजवायें। छाया प्रतियां स्वीकार्य नही होगी। रचना के साथ अप्रकाशित एवं मौलिक होने का प्रमाण पत्र अवश्य देवें। सामग्री की मौलिकता के लिए लेखक / प्रेषक स्वयं जिम्मेदार होगा।
3. अप्रकाशित रचना में स्तरानुकूल संशोधन करने का अधिकार सम्पादक का है।
4. पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक है, पत्रिका के संरक्षक / सम्पादक सहित सभी पद मानद एवं अवैतनिक है। प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है। इनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी प्रसंगों का न्याय क्षेत्र भीलवाड़ा (राज.) होगा।

प्रकाशक

साहित्यांचल
पत्रिका कार्यालय
रुक्मिणी निवास–16 ए 14 बापूनगर
भीलवाड़ा 311 001 (राजस्थान)
मो– 94602 02938 / 94615 31955
E-mail : sahityanchal@gmail.com

पत्रिका सहयोग

वार्षिक	–	200 रू.
एक मुस्त सहयोग	–	2100 रू.
विशिष्ट	–	5100 रू.

पत्रिका सदस्यता / विज्ञापन सहयोग नकद राशि एम. ओ. / डी.डी.से संपादक, साहित्यांचल के नाम रुक्मिणी निवास 16–ए–14, बापूनगर भीलवाड़ा – 311001 (राज) के पते पर प्रेषित कर सकते हैं।

सदस्यता शुल्क ऑनलाईन भुगतान के लिए –साहित्यांचल आई.सी.आई सी.आई.शाखा पुर भीलवाड़ा चालू खाता संख्या 666605003599 में जमा कराकर मोबाईल नं.9460202938 पर संदेश करें।

– सम्पादक

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

क्या ?	लेखक ?	कहाँ ?
सम्पादकीय	– सम्पादक	3
मत–अभिमत	– पाठकगण	4
रिपोर्ट	– निर्मलकान्त व्यास	5
कविता	– ज्ञानप्रकाश 'पियूष'	7
शोध–आलेख	– डॉ0 सुरेश सिंह राठौड़	8
शोध–आलेख	– डॉ0 सुप्रिया पी0	12
दोहे	– डॉ0 ए0बी0 सिंह	16
शोध–आलेख	– डॉ0 मरजीना	17
आलेख	– अनिल नागौरी	18
शोध–आलेख	– राजकुमार सेन	19
शोध–आलेख	– डॉ0 श्यामाश्री सरकार	21
शोध–आलेख	– डा0 शैलजा माहेश्वर्री	23
शोध–आलेख	– सुनील कुमावत	25
कविता	– सुरेन्द्र अँचल	27
शोध–आलेख	– अशोक कुमार शर्मा	28
कविता	– डॉ0 रवीन्द्र कुमार उपाध्याय	29
शोध–आलेख	– चाईना मीना	30
कविता	– भवानी शंकर शर्मा	32
शोध–आलेख	– डॉ0 ज्योतिमा मिश्र	33
धारावाहिक	– श्याम कुमार पोकरा	34
आलेख	– अंजली शर्मा	40
आलेख	– पांरूल कंवरं	41
आलेख	– बंशीलाल 'पारस'	43
कविता	– नथमल झँवर	44
कविता	– डॉ0 केवलकृष्ण पाठक	45
कहानी	– जगदीश चन्द्र व्यास	46
समाचार		48

Scanned with CamScanner

शोध-आलेख

समकालीन हिन्दी कविता में पर्यावरण संरक्षण

- डॉ० सुप्रिया पी०

साहित्य में प्रकृति अथवा पर्यावरण का महत्वपूर्ण स्थान है, विशेषकर काव्य में। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक कविता में प्रकृति उपस्थित रही है। आदिकाल में कवियों ने प्रकृति के बाह्य रूपों का स्वतंत्र चित्रण किया। भक्तिकाल में कवियों ने प्रकृति के प्रति विशेष रूचि नहीं दिखाई। रीतिकालीन कवियों ने प्रकृति की रागात्मकता को अधिक महत्व दिया। आधुनिक काल में छायावादी कविता में प्रकृति एक नए स्वरूप के साथ साहित्य में उपस्थिति दर्ज कराती है। मानव और प्रकृति के बीच के सनातन संबंध को रचनाकार स्वीकृति देते हुए नवीनता के साथ उनका चित्रण करने लगा। प्रसाद की 'कायायनी' के प्रारम्भिक सर्ग में पर्यावरण सजगता की ओर इशारा किया। प्रसाद ने प्रकृति के कोमल रूप के साथ उसके रौद्र रूप को प्रलय के माध्यम से चित्रित किया। छायावाद के बाद नई कविता, जनवादी कविता से होकर समकालीन कविता में प्रकृति वर्णन के साा उसके संरक्षण के संकट के प्रति रचनाकार जागरूक हुए।

मानव ने प्रगति के नाम पर प्रकृति पर बोलबाला किया है जिसका दुष्फल वह भोग रहा है। पर्यावरण संरक्षण की माँग हर कहीं गूँज रही है। साहित्यकार प्रकृति की ओर वापस जाने का संदेश अपनी रचनाओं में दे रहा है। पर्यावरण विज्ञान के माध्यम से पर्यावरण अध्ययन आरम्भ हुआ। आधुनक काल में रचेअल कार्सन के रचना 'साइलेंट स्प्रिंग' में स्पष्ट उल्लेख है कि मानव के हस्तक्षेप से पर्यावरण संतुलन बिगड़ा है। 1973 में पहली बार 'वर्ल्ड एन्वायर्नमेन्ट डे' 5 जून को मनाया गया। साहित्य में एको-क्रिटिसिज्म का सर्वप्रथम प्रयोग 1978 में 'लिटरेचर एण्ड इकोलॉजी : अन एक्सपेरिमेन्ट इन एको क्रिटिसिज्म' में हुआ। हिन्दी साहित्य में पारिस्थितिक बचाव को लेकर रचनाकार सामने आए। छायावादी कविता के बाद समकालीन कविता नवीन संदर्भों के साथ प्रकृति को लेकर पुनः उपस्थित हुई है। त्रिलोचन, ज्ञानेन्द्रपति, अरूण कमल, लीलाधर जगूड़ी, एकान्त श्रीवास्तव, सदानन्द शाही, श्रीकृष्ण कुमार त्रिवेदी, बलदेववंशी आदि समकालीन कवियों ने पर्यावरण के संकट और भविष्य में आने वाली आपत्तियों की ओर ईशारा कर रचना में चिंता व्यक्त की है।

नदी हमारी संस्कृति की पहचान है। विकास को लक्ष्य करके कई नदी परियोजनाएँ बनाई जा रही है। और यह पर्यावरण नाश की वजह बन रहे हैं। बाँधों के निर्माण से बहुत सारी पारिस्थितिक समस्याएँ उभरकर सामने आई है। वनों का विनाश, कृषि एवं जंगलों का पानी में डूब जाना, जमीन का धँसना, जन सामान्य का पलायन, प्राकृतिक असंतुलन के तहत अचानक बाढ़ तथा सूखेपन आदि का सामना करना पड़ रहा है। नदी को बाँध करके रखना प्रकृति के नियम के खिलाफ है। नदी का रूकना जीवन का रूकना है। ऋतुराज की 'सिर्फ बचाव में' एकान्त श्रीवास्तव की 'नक्शे में ढूँढ़ो गाँव' राज्यवर्द्धन की 'नदी आदमखोर हो गई है' कविताएँ बाँध परियोजनाओं से जुड़ी पारिस्थितिक समस्याओं का चित्रण करती है। त्रिलोचन ने 'नदी कामधेनु' कविता में इस प्रकार कहा है–

नदी ने कहा था मुझे बाँधो
मनुष्य ने सुना और
आखिर उसे बाँध लिया
बाँधकर नदी को
मनुष्य दुह रहा है।
अब वह कामधेनु है।

नदी के प्रकोप से बाढ़ आती है। बाँध का उदाहरण देकर पी.वी. विजयन बताते हैं कि बाँधों में दम घुट्ने वाली नदी का प्रकोप ही अक्सर बाढ़ का

Scanned with CamScanner